केजीएमयू में फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी पर वर्कशॉप खत्म

अपराधियों का बनेगा डीएनए डाटा बैंक

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। अपराधियों के बुरे दिन आने वाले हैं। अपराधियों के खिलाफ साक्ष्य जुटाने का काम अब केजीएमयू के डॉक्टर के साथ पुलिस और वकील मिलकर करेंगे। इसके साथ ही अपराधियों का डीएनए डाटा बैंक भी तैयार कर लिया जाएगा। अपराध के बाद वैज्ञानिक तरीके इस्तेमाल कर अपराधी तक पहुंचने की यह कवायद केजीएमयू की फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी यूनिट के साथ होगी। डीजीपी आनंद लाल बनर्जी और केजीएमयू वीसी प्रो. रविकांत की सहमति के बाद बनी नई यूनिट ने काम शुरू कर दिया है।

केजीएमयू के ब्राउन हॉल में फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी वर्कशॉप का समापन बुधवार को हुआ। यूनिट की प्रभारी डॉ. शालिनी गुप्ता ने बताया कि अपराधियों पर नकेल कसने के लिए दो दिन की वर्कशॉप में साक्ष्य जुटाने के कई पहलुओं पर चर्चा हुई। असल में यह पूरी कवायद डॉक्टरों के साथ पुलिस और वकीलों के सहयोग से होगी। पुलिस की मदद के लिए फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी यूनिट की टीम घटनास्थल पर जाएगी। यहां से जरूरी साक्ष्य पूरी सावधानी से लिए जाएंगे।

पुलिस को केस सुलझाने में जरूरी ओपिनियन भी यूनिट के एक्सपर्ट बताएंगे। वहीं केस के ज्यूडिशियरी में जाने के बाद वकीलों से भी संपर्क में रहकर साक्ष्यों पर काम किया जाएगा। वैज्ञानिक साक्ष्य होने के चलते अपराधी का बचना मुश्किल हो जाएगा। अपराधियों का डीएनए डाटा बैंक भी तैयार किया जाएगा। इसकी अनुमति के लिए राज्य सरकार को प्रस्ताव भेजा जाना है।

डॉ. गुप्ता ने बताया कि यूनिट के काम में डेंटिस्ट को प्रशिक्षित भी करने की योजना है। फोरेंसिक ट्रेनिंग के लिए एम्स नई दिल्ली की टीम मौजूद रहेगी। वहीं एम्स के प्रोफेसर डॉ. आदर्श कुमार ने बताया कि यह प्रशिक्षण असल में पीजी डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्स के रूप में होगा। इसके लिए केजीएमयू वीसी ने भी अपनी अनुमति दी है। यह कोर्स फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी यूनिट ही चलाएगी। इससे डेंटिस्ट के लिए नए फील्ड में रोजगार पाने का एक और रास्ता खुलेगा।

फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी यूनिट करेगी पुलिस और ज्यूडिशियरी का सहयोग, डेंटिस्ट को भी मिलेगी स्पेशल ट्रेनिंग

पोस्टमार्टम टीम में शामिल हों डेंटिस्ट

एम्स के डॉ. आदर्श कुमार का कहना है कि पोस्टमार्टम साक्ष्य जुटाने का अहम जरिया होता है। वहीं डेंटिस्ट को इससे दूर रखा जाता है। अगर डेंटिस्ट इसमें शामिल हो तो डेंटल आइडेंटिटी और सलाइवा की मदद से काफी जानकारी जुटाई जा सकती है। सरकारी अधिकारियों को डेंटिस्ट और फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी के महत्व को समझना होगा। डेंटिस्ट की फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी की ट्रेनिंग के बाद यह संभव होगा। नेशनल रूरल हेल्थ मिशन में बड़ी संख्या में डेंटिस्ट की तैनाती की गई है। इनका फायदा सरकार को लेना चाहिए, लेकिन अभी भी पोस्टमार्टम का पैनल बनाते समय एमबीबीएस डॉक्टरों को ही शामिल किया जाता है।

स्कूली बच्चों का बनेगा डेंटल प्रोफाइल

डॉ. गुप्ता ने बताया कि फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी में हम पांच साल से काम कर रहे हैं। कुछ डीएनए डाटा भी हमने जुटाया है। अब हमारी कोशिश गुम होने वाले बच्चों की जल्दी पहचान को लेकर होगी। स्कूलों में जाकर सभी बच्चों की डेंटल प्रोफाइल हम इकट्ठी करेंगे। ऐसे बच्चों के गुम होने के बाद अगर कोई सड़ चुका शव मिलता है तो उसके दांत की बनावट को डेंटल प्रोफाइल डाटा बैंक से मैचिंग कर पहचान की जा सकेगी। यह काम यूपी सरकार की मदद से किया जाएगा।

डॉ. शालिनी को मिली फेलोशिप

फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी में महत्वपूर्ण काम के लिए केजीएमयू की डॉ. शालिनी गुप्ता को इंडियन एसोसिएशन ऑफ फोरेंसिक ओडेंटोलॉजिस्ट्स सम्मानित करेगा। उन्हें देहरादून में 20 सितंबर को आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में एसोसिएशन की फेलोशिप देने की घोषणा की गई है।

तुड़ा-मुड़ा कागज भी हो सकता साक्ष्य

वर्कशॉप में बुधवार को डॉक्यूमेंट इवीडेंस पर जानकारी दी गई। डॉ. शालिनी गुप्ता ने बताया कि क्राइम सीन में हर चीज महत्वपूर्ण हो जाती है। मर्डर अगर कमरे में हुआ है तो कमरे में मौजूद धमकी भरे शब्द, नोटपैड, तुड़ा-मुड़ा कागज का टुकड़ा, कार्बन पेपर, टाइपरराइटर, प्रिंटर की मेमोरी, डायरी महत्वपूर्ण हो जाती है। जले हुए कागज की राख को डॉक्यूमेंट लैब में दुबारा से पढ़ने लायक बनाया जा सकता है। किस मशीन से पेपर प्रिंट या फोटोकॉपी किया गया, फ्रॉड के मामले में पता किया जा सकता है। क्राइम के समय इन चीजों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

बलरामपुर में बुखार से बच्ची की मौत

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। बलरामपुर अस्पताल की इमरजेंसी में भर्ती बुखार से पीड़ित एक बच्ची की मौत हो गई। उसका पिछले कई दिनों से एक निजी अस्पताल में इलाज चल रहा था। उसे बुधवार को गंभीर हालत में बलरामपुर अस्पताल लाया गया था।

अस्पतालों की इमरजेंसी और वार्ड में बुखार से पीड़ित कई मरीज भर्ती हैं जिनकी हालत नाजुक बनी हुई है। बलरामपुर अस्पताल में बुखार से पीड़ित एक बच्ची ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। खदरा की रहने वाले मो. सलीम की बेटी शबाना (13) को कई दिनों से तेज बुखार की शिकायत थी। पिता ने बताया कि बुधवार को दोपहर करीब बारह बजे गंभीर हालत में उसको बलरामपुर अस्पताल के इमरजेंसी में भर्ती कराया गया। करीब एक बजे उसकी हालत अधिक बिगड़ गई और उसकी मौत हो गई।

वहीं दूसरी अस्पताल की इमरजेंसी में भर्ती अमेठी शुक्ल बाजार की रिंकी (14) की हालत गंभीर बनी हुई है। परिवारीजनों ने बताया कि रिंकी का इलाज निजी अस्पताल में चल रहा था। हालत गंभीर होने के बाद डॉक्टरों ने उसे बलरामपुर अस्पताल भेज दिया। सिविल, बलरामपुर और लोहिया अस्पताल की इमरजेंसी में बुखार से पीड़ित 50 से अधिक मरीज भर्ती हैं तो बाल रोग वार्ड उल्टी और दस्त के मरीजों से फुल हैं।

- गंभीर हालत में इमरजेंसी में हुई थी भर्ती, निजी अस्पताल में चल रहा थ इलाज
- कई मरीज निजी अस्पतालों से गंभीर हालत में पहुंच रहे हैं
- सरकारी अस्पताल में कई वार्ड अभी भी फुल

हाई डोज इंजेक्शन ने ली जान

अस्पताल से मिली जानकारी के मुताबिक शबाना का कई दिनों से निजी स्वास्थ्य केंद्र पर इलाज चल रहा था। चिकित्सकों की मानें तो हाई डोज इंजेक्शन और दवाओं के चलते शरीर में संक्रमण फैल गया था। बच्ची की गंभीर हालत की जानकारी परिवारीजनों को दे दी गई थी। शबाना की मौत के बाद परिवारीजनों का रो-रो कर बुरा हाल था।

बलरामपुर में डेंगू की जांच शुरू

सरकारी अस्पतालों में बुखार और ठंड के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी है। चिकित्सकों ने ओपीडी में पहुंचने वाले ऐसे मरीजों को डेंगू या मलेरिया के शक के आधार पर जांच लिखनी शुरू कर दी है। बलरामपुर अस्पताल की पैथोलॉजी में तीन मरीजों की डेंगू जांच हुई लेकिन तीनों ही रिपोर्ट निगेटिव आई। फिजीशियन डॉ. मनोज अग्रवाल बताते हैं कि ठंड के साथ बुखार आना डेंगू या मलेरिया का लक्षण हो सकता है। जांचें एहतियात के तौर पर कराई जा रही हैं।

> बुखार के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ी है। प्राइवेट अस्पतालों के केस भी बढ़ गए हैं जिनको गंभीर हालत में अस्पताल भेजा जा रहा है। सभी मरीजों को भर्ती कर इलाज देने का निर्देश दिया गया है।
> -डॉ. यूएन राय, निदेशक, बलरामपुर अस्पताल

सिविल अस्पताल में मिलेगा मनोरोगियों को इलाज

लखनऊ (ब्यूरो)। सिविल अस्पताल में मनोरोगियों को एक साल बाद फिर से इलाज मिलेगा। करीब एक साल से बंद पड़े विभाग को नई महिला डॉक्टर मिल गई है। अस्पताल के मनोरोग विशेषज्ञ ने कुछ समय पहले सेवानिवृत्ति ले ली थी। इसके बाद से इलाज की पूरी व्यवस्था पटरी से उतर गई थी। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी (सिविल) अस्पताल को नई महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. दीप्ती सिंह मिल गई हैं। अब अस्पताल आने वाले मरीजों को केजीएमयू, बलरामपुर या लोहिया अस्पताल का चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा। अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. आशुतोष दुबे ने बताया कि चोपड़ अस्पताल से डॉ. दीप्ती सिंह को मनोरोग विशेषज्ञ के रूप में तैनाती मिली है। इससे पहले मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. प्रशांत शुक्ला ने ऐच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली थी। इस वजह से करीब एक साल तक मनोरोग विभाग की ओपीडी में ताला पड़ा रहा।

> एक साल से बंद पड़ा था पूरा विभाग

ट्रॉमा सेंटर में नाराज पीआरओ बोले-

एम्बुलेंस मिलेगी न स्ट्रेचर घर ले जाओ मरीज

लखनऊ (ब्यूरो)। ट्रॉमा सेंटर से गांधी वार्ड तक मरीजों की शिफ्टिंग तीमारदारों के लिए परेशानी का सबब बन गई है। ट्रॉमा सेंटर के मेडिसिन वार्ड में भर्ती एक मरीज को गांधी वार्ड जाने के लिए एम्बुलेंस नहीं मिली। परिवारीजन मरीज को स्ट्रेचर पर ले जाने लगे तो पीआरओ ने स्ट्रेचर पर ले जाने से मना कर दिया और मरीज को स्ट्रेचर से उतार दिया। करीब एक घंटे तक मरीज गेट पर पड़ा रहा। नाराज परिवारीजन पीआरओ से भिड़ गए। गुस्साए पीआरओ ने कहा कि एम्बुलेंस और स्ट्रेचर नहीं मिलेगा मरीज को घर ले जाओ।

संत कबीरनगर के राजेंद्र की पत्नी बिंदु देवी (41) को दोपहर करीब 12 बजे ट्रॉमा सेंटर से गांधी वार्ड रेफर किया गया। राजेंद्र ने बताया कि सुबह भीड़ होने से करीब आधे घंटे बाद स्ट्रेचर मिला। इसके बाद जब वो दोपहर करीब 12 बजे मरीज को मेडिसिन वार्ड से लेकर जाने लगे तो गेट पर मौजूद ट्रॉमा के पीआरओ ने रोक लिया और मरीज को स्ट्रेचर से उतारने के लिए कहा। मरीज को वार्ड तक पहुंचाने के लिए एम्बुलेंस मांगी तो गुस्से से लाल पीआरओ ने कह दिया कि मरीज को एम्बुलेंस और स्ट्रेचर कुछ नहीं मिलेगा। मरीज को घर ले जाओ। इस बात से नाराज परिवारीजन पीआरओ से भिड़ बैठे जिससे प्रवेश द्वार पर भीड़ हो गई। मौके पर मौजूद सुरक्षा गार्ड और दूसरे तीमारदारों ने समझाकर मामला शांत कराया। राजेंद्र पत्नी बिंदु देवी को पैदल ही गांधी वार्ड ले जाने को मजबूर हुए।

> एक घंटे तक गेट पर पड़ा रहा मरीज, पैदल ही गया गांधी वार्ड

> मामले की जानकारी नहीं है। मरीजों की शिफ्टिंग के लिए रोगी परिजन एम्बुलेंस सेवा का इस्तेमाल किया जाता है। मरीज को एम्बुलेंस दिलाने की जिम्मेदारी पीआरओ की है। इस बारे में ड्यूटी पर तैनात पीआरओ से पूछताछ की जाएगी।
> -डॉ. एसएन शंखवार, ट्रॉमा सेंटर प्रभारी

नौ महीने बाद सामने से दिखेगा बब्बर शेर प्रिंस

लखनऊ (ब्यूरो)। जू का सबसे पहला स्टार हाइब्रिड बब्बर शेर प्रिंस नौ महीन बाद दर्शकों के सामने खुले बाड़े में आएगा। दिसंबर 2013 में जू में आया यह शेर अभी पीछे के बाड़ों में रह रहा था जिससे वह दर्शकों को कभी-कभार ही नजर आता था।

दरअसल इटावा लायन सफारी प्रोजेक्ट के छह शेरों की तादाद के चलते नर प्रिंस और मादा शिवांगी पीछे के बाड़ों में रह रहे थे। अब प्रोजेक्ट के चार एशियाई बब्बर शेर कुंवरी, ग्रीष्मा, मनन और मोजकब कुबेर के जाने के बाद से प्रशासन ने इन शेरों को आगे के बाड़ों में लाने का प्लान बना लिया है। अधिकारी चाह रहे हैं कि बलरामपुर लायन हाउस में बचे हुए एशियाई शेरों को शिफ्ट करने के बाद दोनों ही हाइब्रिड शेरों को लान हाउस में लाया जाए, ताकि दोनों को ही दर्शक देख सकें। जू प्रशासन जल्द ही दोनों को आगे लाने के लिए चिकित्सकों से प्लान पर चर्चा भी कर चुका है।

> अब तक वह पीछे के बाड़े में रह रहा था, उसे आगे के बाड़े में लाया जाएगा

न्यूज डायरी

बिना प्रमाण पत्र लौटे नि:शक्तजन

लखनऊ। बलरामपुर अस्पताल के विज्ञान भवन में बुधवार को आयोजित विकलांग बोर्ड में ईएनटी के डॉक्टर के देर से पहुंचने के कारण प्रमाण पत्र बनवाने आए कई लोग खाली हाथ लौट गए।प्रमाण पत्र बनवाने पहुंचे बर्फखाना के मो. असलम की बेटी आलिया (8) को सुनने की समस्या है। उन्होंने बताया कि बधिर का प्रमाण पत्र बनवाने के लिए पिछले बुधवार से बोर्ड का चक्कर लगा रहे हैं लेकिन प्रमाण पत्र नहीं बन सका। उनका आरोप था बुधवार को दोपहर एक बजे तक कोई डॉक्टर ही नहीं पहुंचा। इसी तरह चिनहट से आए रामकिशोर पैर से असहाय हैं। उन्होंने बताया कि नि:शक्तता का प्रमाण पत्र बनावाने के लिए तीन बार चक्कर लगा चुके हैं। इस मामले में सीएमओ डॉ. एसएनएस यादव का कहना है कि चिकित्सक ओपीडी में मरीज देखते हैं इससे देरी हुई होगी। बोर्ड में तैनात डॉक्टर समय से पहुंचें इसके लिए संबंधित अस्पताल प्रशासन से बात की जाएगी।

छह डग्गामार बसें जब्त

लखनऊ। परिवहन निगम एवं परिवहन विभाग के संयुक्त चेकिंग अभियान में बुधवार को डग्गामारी करके सवारियों को ढोने वाली छह बसों को जब्त किया गया है। बसें बहराइच, टांडा, अंबेडकरनगर की सवारियों को ढो रही थीं। आलमबाग डिपो के सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक प्रशांत दीक्षित ने बताया कि डग्गामार बसों को पकड़ने के लिए सुबह चारबाग, चिनहट एवं फैजाबाद रोड पर चेकिंग अभियान चला। इस अभियान में यूपी 44 टी 1820, यूपी 44 टी 1009, यूपी 42 टी 8617, यूपी 41 टी 9257, यूपी 45 टी 1203 और यूपी 32 डीएन 8360 को पकड़ा गया। इनमें चार बसें तो चारबाग में स्टेशन के आसपास से सवारियों को बैठाकर टांडा एवं अंबेडकरनगर जाने की तैयारी में थीं। सवारियों को उतारकर रोडवेज की बस में बैठाया गया तो सवारियां कंडक्टर से किराया वापस कराने की मांग करने लगी। लेकिन किराया वापस नहीं हुआ। वहीं फैजाबाद रोड व चिनहट से पकड़ी बसों को चिनहट कोतवाली में जब्त करा दिया गया है।

पटरी पर लौटेगी ऑक्सीजन आपूर्ति

लखनऊ। किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय को ऑक्सीजन आपूर्ति के संकट से उबारने की जिम्मेदारी सर्जरी विभाग के डॉ. संदीप तिवारी को दी गई है। कई महीनों से चल रहे ऑक्सीजन आपूर्ति और प्लांट संचालन में गड़बड़ी मरीजों पर भारी पड़ रही थी। इसी के बाद कुलपति प्रो.रविकांत ने तेजतर्रार डॉ. संदीप तिवारी को व्यवस्था को पटरी पर लाने का जिम्मा सौंपा है। सर्जरी विभाग के ही डॉ. विनोद जैन को ट्रॉमा सेंटर का डिप्टी मेडिकल सुप्रीटेंडेंट, डॉ. समीर मिश्रा को असिस्टेंट मेडिकल सुपरिटेंडेंट नियुक्त किया गया है. फिजियोलॉजी विभाग के प्रो. नरसिंह वर्मा को सब डीन बनाया गया।

अफसरों से भिड़े बर्खास्त संविदाकर्मी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम के बर्खास्त संविदा कर्मियों की बहाली की सुनवाई के दौरान क्षेत्रीय प्रबंधक दफ्तर में बवाल हुआ। बर्खास्त संविदा कर्मियों द्वारा दफ्तर में तालाबंदी को लेकर अफसरों से भिड़ंत भी हुई। हजरतगंज पुलिस को दोनों पक्षों ने तहरीर देकर मुकदमा दर्ज करने की मांग की है। क्षेत्रीय प्रबंधक अखिलेश कुमार सिंह ने बुधवार को बताया कि 10 बर्खास्त संविदा कर्मियों की सुनवाई चल रही थी। बर्खास्त संविदा कर्मचारी होमेंद्र कुमार मिश्रा सहित तीन की सुनवाई पूरी हो चुकी थी। अचानक बर्खास्त संविदा कर्मियों ने मुख्य गेट को बंद कर तालाबंदी करने लगे। एआरएम वर्मा मोबाइल से फोटो खींचने लगे जिससे भिड़ंत हो गई। सिंह का आरोप कि बर्खास्त संविदाकर्मी मोबाइल छीनने लगे थे। वहीं होमेंद्र ने बताया कि बर्खास्त संविदा कर्मियों को सुनवाई के नाम बुलाया जाता फिर गपशप के बाद सुनवाई की दूसरी तारीख तय कर दी जाती है। बुधवार को भी तीन कर्मियों की सुनवाई के बाद बर्खास्त संविदा कर्मियों को वापस कर दिया।

मंचन

सोचते कुछ और बनते कुछ, यही दिखा 'नामहीन किनारे' में

लखनऊ। आदमी जो बनना चाहता है, वो कभी नहीं बन पाता। इसमें कई बार तो उसकी खुद की गलती होती है तो कई बार वो नियति के हाथों मजबूर होता है। कुछ ऐसी ही चीजों को दिखाने की कोशिश बुधवार शाम राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में मंचित विजय मिश्रा निर्देशित नाटक 'नामहीन किनारे' में की गई। नाटक में दिखाया गया कि कुसुम कैसे अभिनेत्री के बजाय एक तवायफ बन गई। वहीं कवि बनने की हसरत रखने वाला युवक कुछ और ही बन गया और क्रांतिकारी बनने की चाह रखने वाले त्रिवेणी बाबू टेढ़ी पुलिस की नौकरी में आ गये। मंचन में तीनों के जीवन का ताना-बाना उतरा। मंचन में विनीता, अर्पित और आशीष ने अभिनय किया।

नेत्रदान से फैलाएं उजियारा

जागरूकता कार्यक्रम में 200 से अधिक ने भरे शपथ पत्र

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। शहर के आरडी शुक्ला की आंख की रोशनी अल्सर की वजह से चली गई थी। उनके जीवन में निराशा भर गई कि जिदंगी कैसे कटेगी लेकिन उनके अंधेरे जीवन में किसी नेत्रदानी की कॉर्निया से फिर से रोशनी आ गई। वह ही नहीं ऐसे सैकड़ों लोग हैं जो नेत्रदानियों की वजह से इस दुनिया को देख पा रहे हैं। इसी जागरूकता को जन-जन तक पहुंचाने के लिए 25 अगस्त से 8 सितंबर तक नेत्रदान पखवाड़ा मनाया जाता है।

जिंदगी खत्म होने के बाद हमारी आंखें किसी दूसरे की जिंदगी में भी उजियारा फैला सकती हैं। इसी सूत्र वाक्य को जन-जन तक पहुंचाने में इंदिरा गांधी आई हॉस्पिटल के डॉ. कुलदीप और उनकी टीम लगी हुई है। डॉ. कुलदीप ने बताया कि एक व्यक्ति के नेत्रदान से दो लोगों की आंखों की रोशनी मिलती है। अब तक इंदिरा गांधी आई हॉस्पिटल में 300 लोगों का कार्निया ट्रांसप्लांट किया जा चुका है। ये सभी कॉर्निया हैदराबाद से लाए जाते हैं।

एक व्यक्ति दे सकता है दो लोगों की आंखों को रोशनी, नेत्रदान के लिए उम्र की कोई सीमा नहीं

25 अगस्त से 8 सितंबर तक मनाया जाता है नेत्रदान पखवाड़ा

आई बैंक खुलेगा

इंदिरा गांधी आई हॉस्पिटल में अगले माह से आई बैंक की सुविधा शुरू हो जाएगी। इससे राजधानी व उसके आसपास के जनपदों में जाकर मृत्यु के बाद कॉर्निया निकालने और फिर उसे सुरक्षित रखने की व्यवस्था उपलब्ध होगी। अस्पताल के चीफ मेडिकल ऑफिसिर डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया कि 25 अगस्त से चल रहे नेत्रदान जागरूकता कार्यक्रम में अब तक 200 से अधिक लोग कॉर्निया दान करने का शपथ पत्र भर चुके हैं।

कुछ जरूरी तथ्य

- 13 से 75 साल का कोई भी व्यक्ति नेत्रदान कर सकता है।
- मृत्यु के 6 से 8 घंटे के अंदर नेत्रदान किया जा सकता है।
- नेत्रदाता के शरीर को ऐसी जगह रखें जहां पंखा न चल रहा हो।
- मृत्यु के बाद आंखों पर गीली रुई या फिर बर्फ का पैकेट रखें।
- सिर के नीचे तकिया जरूर लगा दें।
- पूरी आंख नहीं सिर्फ कॉर्निया (पुतली) निकाली जाती है।

नेत्रदान के लिए यहां करें संपर्क

नेत्रदान के लिए मोबाइल नंबर 7499426557, 0522-2335509 पर या फिर सीधे केजीएमयू के मोबाइल नंबर 9838552641, लैंडलाइन नंबर 0522-2258827, टोल फ्री नंबर 1053 पर संपर्क किया जा सकता है। इसकेअलावा मोबाइल नंबर 9044401154 पर भी नेत्रदान या उसकी जानकारी के लिए संपर्क किया जा सकता है।

इबादत

मदीना पहुंचे नूर मोहम्मद ने अमर उजाला से की बातचीत

'अल्लाह की जन्नत में हम पाक हो गए'

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। मदीना ए मुनव्वरा पर अल्लाह की नूर की बारिश के बीच अलग-अलग भाषाओं के विभिन्न देशों के हज यात्री, अल्लाह ओ अकबर की सदा पर एकजुट हो जाते हैं। अल्लाह की रजा व हज ए मुबारक पर रवाना हुए नूर मोहम्मद ने बुधवार को मदीने से अमर उजाला को फोन पर बताया कि यहां पहुंच कर हज यात्री तमाम परेशानियों को भूल कर सिर्फ इबादत के बारे में सोचता है।

नूर मोहम्मद ने बताया कि मदीना मुनव्वरा पहुंचने पर लगा जैसे हम सब अपने घर पर हैं। कोई परेशानी नहीं हुई। यहां इंडिया के हज यात्रियों के लिए बेहतर इंतजाम हैं। हम सबने नहा कर सफर की थकान उतारने के बाद होटल से मस्जिद ए नबवी में नमाज अदा करने गए। यहां हजारों मुसलमान अल्लाह की इबादत के लिए हाजिर मिले। उन्होंने बताया कि यहां लोगों की भाषा जरूर जुदा है लेकिन मकसद एक है। यहां देश के अलावा विदेशों के हज यात्री भी साथ नमाज अदा करने के लिए एक साथ खड़े हुए। उन्हें किसी तरह की कोई शिकायत नहीं है। हर जगह ताकीद कर दी गई है और निर्देश लिख दिए गए हैं। स्वास्थ्य संबंधी भी जानकारियां देने के साथ दवाएं भी उपलब्ध करा दी गई हैं।

मदीना से आगे शुरू होगा हज ए सफर

नूर मोहम्मद ने बताया कि हज यात्रा पर मदीना पहुंचे जिन हज यात्रियों को आठ दिन पूरे हो गए उन्हें बृहस्पतिवार से कबा मस्जिद होते हुए मक्का शहर की तरफ आगे ले जाया जाएगा। यहां बीच में कई जगह हज यात्री रुक कर जियारत और नमाज ए सफर अदा कर हज फरीजे को अदा करेंगे।

अमौसी एयरपोर्ट से बुधवार को जब विमान हज यात्रियों को लेकर रवाना हुए तो उनके परिवारीजनों ने कुछ इस तरह अलविदा कहा।

हज हाउस में खुला स्टेट बैंक

राज्य हज कमेटी ने हज यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए हज हाउस में ही स्टेट बैंक की अस्थाई शाखा खोल दी है। यह जानकारी राज्य हज कमेटी के सचिव डॉ. सुल्तान अहमद ने दी।

299 हज यात्री मदीना रवाना

लखनऊ। हज यात्रा पर बुधवार को लखनऊ से जाने वाले 300 हज यात्रियों में बदायूं की किशवरी हज पर नहीं जा सकीं। बताया गया है कि उनकी तबियत खराब होने से उन्हें हज यात्रा की अनुमति नहीं दी गई। किशवरी को हज हाउस के अस्थायी अस्पताल में भर्ती कराया गया। डाक्टरों ने उन्हें हज यात्रा करने से मना किया। राज्य हज कमेटी के सचिव डॉ. सुल्तान अहमद ने बताया कि किशवरी को छोड़ अन्य 299 हज यात्रियों को सुबह 11:45 बजे मदीना रवाना कर दिया गया।

एयरपोर्ट पर इबोला से निपटने के इंतजाम नाकाफी

लखनऊ (ब्यूरो)। चौधरी चरण सिंह एयरपोर्ट पर आने वाले यात्रियों में इबोला वायरस की जांच के इंतजाम नाकाफी हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार से आई चिकित्सकों की दो सदस्यीय टीम ने एयरपोर्ट पर तैनात चिकित्सा इंतजामों की जांच के बाद उसे अधूरा बताया है। टीम ने बुधवार को अचानक एयरपोर्ट का निरीक्षण किया था।

इबोला वायरस से संक्रमित यात्रियों की पहचान के लिए एयरपोर्ट पर चिकित्सकों की एक टीम तैनात की गई थी। इस टीम का काम अफ्रीकी देशों से आने वाले यात्रियों में इबोला वायरस के संक्रमण की जांच करनी थी। स्वास्थ्य विभाग की तैयारियों को देखने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार के डॉ. केके मित्रा व एक अन्य चिकित्सक अचानक एयरपोर्ट पहुंच गए। उन्होंने जांच में पाया कि जिस टीम की तैनाती एयरपोर्ट पर की गई है उसके पास खुद को वायरस से बचाने के संसाधन हैं और न ही वहां मरीज की जांच करने के लिए स्ट्रेचर या बैठने की व्यवस्था। टीम जहां थी वो जगह भी आईसोलेटेड नहीं थी। वहां एसी नहीं था। चिकित्सकों को मरीजों की जांच का तरीका भी नहीं बताया गया था। कमियों की जानकारी सीएमओ डॉ. एसएनएस यादव को भी दी गई है।

> स्वाथ्य मंत्रालय की टीम ने किया दौरा, जताई नाराजगी